जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

10 फरवरी, 2025

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के हॉल ऑफ गर्ल्स रेजीडेंस ने "भारत में युवाओं पर नशीली दवाओं के दुरुपयोग और इसके प्रभाव" पर जागरूकता अभियान का आयोजन किया

भारत सरकार की पहल "नशा मुक्त भारत अभियान" के अनुरूप, जामिया मिल्लिया इस्लामिया के हॉल ऑफ गर्ल्स रेजीडेंस ने 07 फरवरी, 2025 को "भारत में युवाओं पर नशीली दवाओं के दुरुपयोग की समस्या और इसके प्रभाव" शीर्षक से जागरूकता अभियान का आयोजन किया। इस पहल का उद्देश्य छात्रों को मादक द्रव्यों के सेवन के खतरों और स्वस्थ, व्यसन-मुक्त जीवन जीने के महत्त्व के बारे में शिक्षित करना और संवेदनशील बनाना था। इस अभियान के अंतर्गत छात्रों को पोस्टर-मेकिंग प्रतियोगिता, स्लोगन-लेखन प्रतियोगिता और सुलेख प्रतियोगिता के माध्यम से अपनी रचनात्मकता दिखाने के लिए प्रोत्साहित किया गया जिससे उन्हें कलात्मक और प्रभावशाली तरीकों से नशीली दवाओं के दुरुपयोग के खिलाफ अपना विचार व्यक्त करने का मौका मिला।

कार्यक्रम में जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलसचिव प्रो मोहम्मद महताब आलम रिजवी, जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलपति प्रो मजहर आसिफ की पत्नी श्रीमती शबाया प्रवीण आसिफ, जामिया मिल्लिया इस्लामिया के मुख्य कुलानुशासक प्रो नवेद जमाल, वरिष्ठ सलाहकार मनोवैज्ञानिक प्रो (डॉ.) निमेश जी देसाई, ब्रह्माकुमारी विधात्री बहन, विभिन्न संकायों के प्रोफेसर, लड़कों के छात्रावास के प्रोवोस्ट, जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलपति के ओएसडी (विशेष कार्याधिकारी) डॉ. सत्य प्रकाश प्रसाद साथ ही प्रोवोस्ट प्रो अरविंदर ए अंसारी, वार्डन और हॉल ऑफ गर्ल्स रेजीडेंस में रहने वाली छात्राएं मौजूद रहीं।

कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलपति प्रो मजहर आसिफ थे जबकि संरक्षक जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलसचिव प्रो मोहम्मद महताब आलम रिजवी थे। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रसिद्ध मनोचिकित्सक और वरिष्ठ सलाहकार मनोवैज्ञानिक प्रो. (डॉ.) निमेश जी. देसाई थे।

कार्यक्रम की शुरुआत प्रो. अरविंदर ए. अंसारी के स्वागत भाषण से हुई जिसमें उन्होंने नशा मुक्त वातावरण को बढ़ावा देने में विश्वविद्यालयों और छात्रावासों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि शैक्षणिक संस्थान केवल अकादमिक शिक्षा प्राप्ति के स्थान नहीं हैं अपितु वे ऐसे स्थान भी हैं जहाँ छात्र ऐसी आदतें, दृष्टिकोण और मूल्य विकसित करते हैं जो उनके भविष्य को आकार देते हैं।

उन्होंने इस बात पर बल दिया कि विश्वविद्यालयों और छात्रावासों को छात्रों को मादक द्रव्यों के सेवन के खतरों के बारे में शिक्षित करने, मानसिक स्वास्थ्य सहायता प्रदान करने और सक्रिय जीवनशैली विकल्पों को प्रोत्साहित करने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। उन्होंने छात्रों, शिक्षकों और प्रशासकों से जागरूकता और समर्थन का एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए एकजुट होकर काम करने का आग्रह किया जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि परिसर छात्रों के सर्वांगीण विकास और उनके सशक्तिकरण का केंद्र बने रहें और व्यसन-संबंधी जोखिमों से मुक्त रहें।

प्रो. (डॉ.) निमेश जी. देसाई ने नशीली दवाओं की लत के मनोवैज्ञानिक और शारीरिक प्रभावों के बारे में व्यावहारिक व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि किस तरह मादक द्रव्यों के सेवन से मस्तिष्क की रासायनिक संरचना में बदलाव आता है, निर्णय लेने की क्षमता कम हो जाती है और भावनात्मक स्थिरता प्रभावित होती है जिससे अक्सर दीर्घकालिक निर्भरता और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी विकार हो जाते हैं।